मेरे आँगनवाड़ी केन्द्र की बदलाव यात्रा : सुनीता सिंह

निवेदिता तिवारी

मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में एक जगह है कोलार रोड। इसी से सटा है दामखेड़ा सेक्टर-1। इस रिहाइश की तंग गलियाँ, कच्चे-पक्के सँकरे रास्ते और झुग्गी-झोपड़ियाँ, शहर की आधुनिक तस्वीर से बिल्कुल अलग एक दुनिया है दामखेड़ा। वर्ष 2006 में, यहाँ एक शासकीय प्राथमिक विद्यालय के परिसर में ही आँगनवाड़ी केन्द्र स्थापित करने की घोषणा की गई थी। यहाँ की आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री सुनीता सिंह ने अपनी मेहनत व लगन से इसे एक नया रूप-रंग दिया, और बच्चों के सीखने व आनन्द लेने की जगह बनाई। उम्मीद की रोशनी बिखेरते आँगनवाड़ी केन्द्र की यात्रा पर आधारित है यह कहानी।

बिना छत का स्कूल

इस आँगनवाड़ी केन्द्र की घोषणा तो हुई, कार्यकर्त्री व सहायिका भी आ गईं, लेकिन इसके लिए कोई कमरा नहीं मिला। इसलिए कभी मन्दिर के चबूतरे पर तो कभी खुले आसमान के नीचे बच्चों को पढ़ाया जाता। धूप, बारिश, ठण्ड– हर मौसम में नई चुनौतियाँ थीं। लेकिन एक बड़ी चुनौती थी, आँगनवाड़ी के बारे में समुदाय का संकोच और शंका से भरा रवैया। कार्यकर्त्री सुनीता और सहायिका पार्वती घर-घर जाकर माताओं से बात करतीं, समझातीं कि 3 से 6 साल के बच्चों के लिए आँगनवाड़ी क्यों ज़रूरी है। धीरे-धीरे कई माताएँ अपने नौनिहालों को आँगनवाड़ी भेजने लगीं। बच्चों की संख्या बढ़ी तो 2015 में विद्यालय का एक कमरा आँगनवाड़ी के लिए दे दिया गया। यानी 9 साल की कोशिशों के बाद। कमरा तो पहले भी था, लेकिन बच्चों के लिए तैयार नहीं था। विद्यालय परिसर के एक कोने में स्थित यह कमरा एक बड़े नाले से सटा हुआ था। इसके आस-पास कचरे का ढेर रहता था। स्थिति इतनी ख़राब थी कि बैठने के लिए मुँह पर मास्क लगाना पड़ता था। यही नहीं, रात को असामाजिक तत्त्व आँगनवाड़ी कक्ष के सामने शराब की बोतलें और कचरा फेंक जाते थे। वर्ष 2020 में तो कोविड के कारण शाला-पूर्व शिक्षा का कार्य और भी कठिन हो गया।

चित्र 1 : गतिविधियों में ध्यान से जुटे बच्चे

नवम्बर 2022 में शाला-पूर्व शिक्षा के लिए प्रशिक्षण हुआ। इस प्रशिक्षण से कार्यकर्त्री और उनकी सहायिका को एक नई ऊर्जा व प्रेरणा मिली। उन्होंने न केवल समुदाय से नियमित बात करनी शुरू की, बल्कि आँगनवाड़ी को भी एक नया रूप दिया। सफ़ेद बोरियों को सिलकर बच्चों के लिए बैठने के लिए चटाइयाँ बनाईं, और दीवारों को अलग-अलग तरह के रंग-बिरंगे चार्ट से सजाया। इनमें कविता-कहानी चार्ट, अक्षर-संख्या और फलों व सब्ज़ियों के चार्ट शामिल थे। केन्द्र का हर कोना बच्चों का स्वागत करने के लिए तैयार किया गया।

खेल और रचनात्मकता को पंख लगे

हालाँकि अब भी बच्चे केवल भोजन करने आते और घर लौट जाते। लेकिन आँगनवाड़ी के नए स्वरूप को देखकर धीरे-धीरे लोग समझने लगे कि आँगनवाड़ी केवल पोषण का केन्द्र नहीं, बल्कि बच्चों के सर्वांगीण विकास का एक मंच है। कार्यकर्त्री ने आँगनवाड़ी में कुछ शाला-पूर्व शिक्षा गतिविधियाँ शुरू कीं। मसलन,

- गेंद, रस्सी और ब्लॉक्स से खेलकूद;
- बच्चों के हाथों की छाप बनवाना;
- नाम और उम्र लिखवाना;
- चित्र बनाना और रंग भरना;
- कहानी-कविता सुनना और सुनाना; आदि।

चित्र 2 : खेलते-सीखते बच्चे

चित्र 3 : सब्ज़ियों वाली थीम पर बातचीत

उन्होंने अपने केन्द्र में एक व्यवस्थित समय सारिणी भी बनाई। धीरे-धीरे बच्चे नियमित आने लगे। अब वे सिर्फ़ भोजन करके जाने के बजाय गतिविधियों में भी दिलचस्पी लेने लगे।

आनन्ददायक शिक्षा की कल्पना

छोटे बच्चों का पहला शैक्षिक अनुभव आनन्ददायक, रचनात्मक और प्रेरणाप्रद होना चाहिए। इस विचार को वास्तविक रूप देने के लिए कार्यकर्त्री ने आँगनवाड़ी केन्द्र में 'सीखने के कोने' तैयार किए। सीखने के ये कोने और इनमें रखी कुछ सामग्रियाँ इस प्रकार थीं–

- **पढ़ने का कोना :** रंग-बिरंगी किताबें, चित्रकथाएँ और कहानी कार्ड।
- **खेलने का कोना :** पज़ल, गिनती के खिलौने और रंगीन ब्लॉक।
- **रचनात्मकता का कोना :** ड्राइंग शीट, क्रेयॉन, मिट्टी और अन्य आर्ट सामग्री।
- **नाटक और अभिनय का कोना :** छोटी-छोटी वेशभूषाएँ, कठपुतलियाँ और मंच की व्यवस्था।
- **संज्ञानात्मक कौशल का कोना :** पैटर्न मैचिंग, रंग पहचान और आकार सीखने की गतिविधियाँ।

इन गतिविधियों के ज़रिए बच्चे खेल-खेल में रंग पहचानना, गिनती करना, चित्र बनाना और कहानी सुनना-सुनाना सीखते हैं। इससे उनका भाषा विकास, तर्कशक्ति, सामाजिक सहभागिता और आत्मविश्वास मज़बूत हुआ है।

समुदाय की भागीदारी

कार्यकर्त्री ने अभिभावकों के साथ नियमित संवाद शुरू किया। वे उन्हें आँगनवाड़ी में अपने कार्य और अनुभव साझा करने के लिए आमंत्रित करतीं। उदाहरण के लिए, उन्होंने एक सब्ज़ी बेचने वाले अभिभावक से अनुरोध कर एक दिन उनका ठेला आँगनवाड़ी के पास लगवाया। इससे बच्चों को सब्ज़ियों की पहचान, बाज़ार की कार्यप्रणाली और ख़रीद-बिक्री की प्रक्रिया सीखने का मौक़ा मिला। वे समय-समय पर अलग-अलग अभिभावकों से बातचीत कर इस तरह की गतिविधियाँ आयोजित करती रहती हैं। यही नहीं, उन्होंने कुछ माताओं से बात की कि वे आँगनवाड़ी आएँ, और वहाँ आकर बच्चों के साथ गीत, कविता और कहानी का कार्य करें। कई माताओं ने इसमें रुचि दिखाई, और बच्चों के साथ कविता-कहानी सुनने-सुनाने का काम भी किया।

वे अपने आस-पास के युवाओं से सम्पर्क कर समय-समय पर उनके साथ कई गतिविधियाँ आयोजित करती हैं ताकि समुदाय सक्रिय और जुड़ा रह सके। वे उनके साथ मिट्टी की मूर्तियाँ बनाने, नारियल के खोल का गमले के रूप में उपयोग कर पौधे लगाने जैसे कार्य कर पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने वाले कार्यक्रम कराती हैं। इससे न केवल युवाओं में जागरूकता आती है, बल्कि आँगनवाड़ी के आस-पास की गतिविधियाँ भी सकारात्मक दिशा में बढ़ती हैं। इसी तरह, वृक्षारोपण दिवस, बाल दिवस, स्वतंत्रता दिवस का आयोजन करने में भी वे समुदाय के बड़े बच्चों की मदद लेती हैं।

समुदाय और बच्चों के बीच जुड़ाव को और मज़बूत करने के लिए कार्यकर्त्री ने 'बाल चौपाल' की शुरुआत की। यह सिर्फ़ एक आयोजन नहीं, बल्कि बच्चों के लिए आत्मविश्वास से अपनी बात कहने का मंच था। यहाँ बच्चे कविता सुनाते, छोटे नाटकों में भाग लेते, तथा गीत और कहानियों के माध्यम से अपनी रचनात्मकता दिखाते। जब अभिभावकों ने अपने बच्चों को मंच पर खड़े होते, पूरे आत्मविश्वास से बोलते देखा, उन्हें आँगनवाड़ी की असली ताक़त का एहसास हुआ।

कार्यकर्त्री द्वारा एक व्हाट्सऐप समूह बनाया गया जिसमें सभी अभिभावकों को जोड़ा गया। इस समूह में वे नियमित तौर पर बच्चों की तस्वीरें, गतिविधियों के वीडियो और उनकी प्रगति साझा करतीं। जब अभिभावकों ने अपने बच्चों को हँसते-खेलते, कविता बोलते और नई चीज़ें सीखते देखा तो उनका भरोसा और मज़बूत हुआ। अब स्थिति यह थी कि अभिभावक ख़ुद

आकर पूछते, "आज मेरे बच्चे ने क्या नया सीखा?" इससे बच्चे समय पर आने लगे, शिक्षा की निरन्तरता बनी रही, और उनकी रुचि में भी कमी नहीं आई।

साझी मेहनत का परिणाम

आँगनवाड़ी के कार्यों को कार्यकर्त्री व उनकी सहायिका मिलकर करती हैं। उन्होंने अपनी सहायिका की उन सभी गतिविधियों को सीखने में मदद की जो वे बच्चों के साथ करवाती थीं। दोनों ने अपनी ज़िम्मेदारियाँ भी बाँट रखी हैं।

सहायिका आँगनवाड़ी की व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में अहम भूमिका निभाती हैं।

- डोमेन-आधारित कोने बनाना—झोला पुस्तकालय, कला गतिविधि कोना, रीडिंग कॉर्नर और खेल गतिविधि कोना;
- कंकड़-पत्थर, पत्ते, नीम की निम्बोली, बोतल के ढक्कन और रंगीन बोतलों जैसी स्थानीय वस्तुओं से आकर्षक शिक्षण सामग्री तैयार करना;
- समय-समय पर चार्ट व पोस्टर बदलना, और केन्द्र को बच्चों के लिए ताज़ा और रोचक बनाए रखना;
- मिट्टी के खिलौने बनाने के लिए मिट्टी लाना, छानना, आटे की तरह गूँथकर सुरक्षित रखना;
- गिनती, जोड़-घटाव, ढेर बनाना और वर्गीकरण की गतिविधियों के लिए कंकड़-पत्थर लाना, उन्हें रँगना और बच्चों के लिए तैयार करना; आदि।

कार्यकर्त्री बच्चों के रचनात्मक विकास के लिए कला गतिविधियाँ कराती हैं।

- धागों को रँगकर उनसे चित्र बनवाना;
- हाथों और सब्ज़ियों के छाप से डिज़ाइन बनाना;
- कविता और चित्र को दुबारा उपयोग लायक़ बनाने के लिए टेक होम राशन बोरियों पर लिखना;
- पुराने कैलेंडर के पीछे के सफ़ेद हिस्से पर कविताएँ लिखकर और सफ़ेद बोरियों को पॉकेट बोर्ड या पोस्टर के रूप में प्रयोग करके उन्होंने कम जगह की चुनौती को दूर किया आदि।

ब्लैकबोर्ड की कमी को सुनीताजी ने काले बैनर से पूरा किया। ये बैनर दरअसल उसी जगह पर चुनाव प्रचार के लिए लगाए गए फ़्लेक्स पोस्टर थे, जिनके पीछे के हिस्से को उन्होंने काले रंग से रँग दिया था, इस तरह फोल्डिंग ब्लैकबोर्ड तैयार हो गया। इसे दीवार पर टाँगा जा सकता है, और ज़रूरत होने पर हटाया भी जा सकता है। पुरानी किताबों के चित्रों से बच्चों के लिए चित्र कार्ड बनाती हैं, और पुराने फ़्लेक्स बैनर पर कहानियाँ लिखती हैं। इनमें बच्चे, बताए गए शब्दों को रेखांकित करते हैं और मिटाकर दोबारा इस्तेमाल करते हैं। लोग जो काँच की बोतलें उनकी आँगनवाड़ी में फेंककर जाते हैं, उनमें वे मनीप्लांट जैसे पौधे लगा देती हैं। कार्यकर्त्री और सहायिका पहले ही तय कर लेती हैं कि अगले दिन कौन-सी गतिविधियाँ होंगी और कौन-सी शिक्षण सामग्री यानी टीएलएम की ज़रूरत होगी। इसी तरह उन्होंने शिक्षण सामग्री जुटाने और उसे सुव्यवस्थित रखने की एक प्रणाली बनाई है ताकि आँगनवाड़ी केन्द्र हमेशा सुसज्जित और व्यवस्थित रहे। यह जीवन्त माहौल न केवल बच्चों को आकर्षित करता है, बल्कि समुदाय की भागीदारी भी बढ़ाता है।

संवेदनशील मूल्यांकन

कार्यकर्त्री मानती हैं कि बच्चे की प्रगति को केवल रिपोर्ट कार्ड के आँकड़ों से नहीं मापा जा सकता।

वे प्रतिदिन सूक्ष्म निरीक्षण करती हैं, और बच्चों की क्षमताओं को रिकॉर्ड करती हैं। उदाहरण के लिए,

- कौन-सा बच्चा कौन-से रंग पहचान रहा है;
- कौन बिना मदद के कहानी सुना सकता है;
- कौन चित्रों को जोड़कर कुछ नया रच रहा है; आदि।

इन सभी टिप्पणियों और अनुभवों को वे सहेजकर रखती हैं। उनके पास प्रत्येक बच्चे की सीखने की यात्रा से जुड़े विवरणों के दस्तावेज़ हैं।

सहयोग और मार्गदर्शन

कार्यकर्त्री न केवल अपने आँगनवाड़ी केन्द्र तक सीमित रहती हैं, बल्कि अन्य केन्द्रों की कार्यकर्त्रियों के लिए भी प्रेरणा और मार्गदर्शन का स्रोत हैं। वे उन्हें टीम की तरह काम करने, अनुभव साझा करने, और केन्द्र को 'बचपन का पहला विद्यालय' नहीं, बल्कि 'बचपन का पहला घर' बनाने की सलाह देती हैं। अब कई कार्यकर्त्री सुनीताजी के पास सुझाव लेने आती हैं, और वे भी समय-समय पर उनके केन्द्र में जाकर उन्हें सहयोग करती हैं।

चित्र 4 : बच्चों के साथ मुखौटों वाली गतिविधि करातीं सुनीता सिंह

ध्यान देने से बदला माहौल

कार्यकर्त्री का ख़ास गुण है, बच्चे की व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर ध्यान देना। गतिविधियों से दूर रहने वाला हर्ष, आज कार्यकर्त्री के मार्गदर्शन में आत्मविश्वास से भर गया है। अब वह कहानी सुनाता है, और खेलों में उत्साह से भाग लेता है। यह केवल एक बच्चे का नहीं, बल्कि पूरे वातावरण का बदलाव है।

प्रेरणा की मिसाल

अपने समर्पण, नवाचार और संवेदनशीलता के कारण सुनीता सचमुच एक 'उम्मीद जगाने वाली शिक्षक' बन गई हैं। उनकी कहानी साबित करती है कि यदि दृष्टि और नीयत सही हो तो सीमित संसाधनों में भी बदलाव की एक मिसाल क़ायम की जा सकती है।

निवेदिता तिवारी विगत 15 वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हैं। शिक्षा के साथ-साथ उन्होंने कविता, कहानी, वैचारिक लेखन और रचनात्मक लेखन में भी योगदान दिया है। वे विगत 4 वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में सन्दर्भ व्यक्ति के रूप में कार्य कर रही हैं। वर्तमान में वे भोपाल में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : nivedita.tiwari@azimpremjifoundation.org